For U.G.-Part-III (Hons.)
Paper-VI

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

19वीं सदी भारत के विभिन्न भागों में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की सदी थी। भारत पर अंग्रेजी आधिपत्य ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं की कुछ गम्भीर खामियों को उभारकर सामने रख दिया, जिसके परिणामस्वरूप अनेक व्यक्तियों और आंदोलनों ने सामाजिक-धार्मिक पुनरुत्थान एवं सुधार की कोशिशें शुरू की। इन्हीं कोशिशों को समवेत रूप से "पुनर्जागरण" (Renaissance) कहते हैं। यह एक जटिल सामाजिक घटना थी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह घटना उस समय घटी जब भारत ब्रिटिश उपनिवेशवाद के अधीन था।

प्रायः इस बात पर विवाद रहा है कि वह कौन सी शक्ति थी जिसने भारत में जागरण की लहर को जन्म दिया। क्या यह पाश्चात्य प्रभाव था या औपनिवेशिक हस्तक्षेप का जवाब या फिर इसके तार भारतीय समाज में आ रहे उन बदलावों से जुड़े हैं जिनके फलस्वरूप नये वर्गों का उदय हो रहा था? ऐसे में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों को औपनिवेशिक भारत के नये उभरते मध्यम वर्ग की सामाजिक महत्वकांक्षा की अभिव्यक्ति के रूप में देखना होगा।

इन सुधार आंदोलनों के पीछे पाश्चात्य-प्रभाव को माननेवालों का तर्क है कि प्रेरक शक्तियाँ करीब-करीब पाश्चात्य ही थी जैसे- अंग्रेजी साहित्य और शिक्षा, ईसाई धर्म, पूर्वी अनुसंधान, यूरोपीय विज्ञान और दर्शन और पाश्चात्य सभ्यता के भौतिकवादी तत्व। किंतु ऐसा स्वीकारना इन जटिल आंदोलनों के स्वरूप का एकांगी वर्णन होगा। यूं भी यह मानना मुश्किल है कि विदेशी आधिपत्य पराधीन जनता के पुनर्जागरण में सहायता करेगा। सुधार आंदोलनों को विदेशी आधिपत्य द्वारा उत्पन्न चुनौती की प्रक्रिया के जवाब के रूप में समझना चाहिए। वे समाज सुधार के प्रयत्न के रूप में तो महत्वपूर्ण थे उससे कहीं ज्यादा औपनिवेशिकता से उत्पन्न नई परिस्थितियों के विरुद्ध उन्होंने संघर्ष किया।

इस प्रकार इन सुधारों के पीछे

से उत्पन्न चुनौतियाँ थी

औपनिवेशिक शासन^ परिणामस्वरूप समाज एवं इसकी संस्थाओं में एक नयापन लाने की आवश्यकता थी। हालांकि जनता के बीच सांस्कृतिक चेतना जगाने और उनका विश्वास बढ़ाने के लिए कुछ सुधारकों ने पुनरुत्थान की प्रवृत्तियों का भी परिचय दिया जैसे भारतीय अतीत का गुणगान और सभ्यता-संस्कृति की रक्षा करने की प्रवृत्तियाँ।

सुधार की सबसे पहली अभिव्यक्ति बंगाल में राजा राम मोहन राय द्वारा हुई। इन्होंने 1814 में 'आत्मीय सभा' की स्थापना की जो 1829 में ब्रह्मसमाज में परिणत हो गया। शीघ्र ही सुधार की भावना अन्य क्षेत्रों में भी पहुँची। महाराष्ट्र की परमहंस मंडली और प्रार्थना समाज पंजाब और उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में आर्य समाज हिन्दू समाज के प्रमुख आंदोलन थे। इस दौरान कई अन्य धार्मिक व जातिगत आंदोलन जैसे यू.पी. में कायस्थ सभा और पंजाब में सरीन सभा उभरे। पिछड़ी जातियों में भी विभिन्न संस्थाओं द्वारा जागृति लाने की कोशिश हुई जैसे महाराष्ट्र में सत्यशोधक समाज और केरल में श्री नारायण धर्म परिपालन सभा। अहमदिया और अलीगढ़ आंदोलन, सिंह सभा तथा रहनुमाई मज़्दायसनान सभा ने क्रमशः मुसलमानों, सिक्खों व पारसियों में सुधार की भावना का प्रतिनिधित्व किया। ये सभी आंदोलन धर्म, जाति, क्षेत्र और काल की सीमा से बंधे थे।

सुधार आंदोलनों ने समाज सुधार के लिए धर्म का सहारा लिया। मुख्य जोर नारी-मुक्ति पर था जिसमें सतीप्रथा, शिशु-हत्या, विधवा तथा बाल-विवाह जैसी समस्याओं को उठाया गया। जातिवाद व छुआछूत के खिलाफ सुधारकों ने आवाज उठाई। समाज के ज्ञानोदय हेतु शिक्षा पर भी उन्होंने जोर दिया। धार्मिक मुद्दों में प्रमुख थे - मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, धार्मिक अंधविश्वास एवं पंडितों के शोषण के खिलाफ आवाज।

सुधारों के लिए मुख्य रूप से चार तरीके इस्तेमाल में लाये गये :-

(A) <u>आंतरिक सुधार :-</u> राममोहन राय का मानना था कि सुधारों की सफलता के लिए जरूरी है वह समाज के अंदर से हो परिणामस्वरूप इस प्रणाली के सुधारकों ने समाज में जागरूकता लाने का पर

अपना ध्यान केन्द्रित किया। कितावें छापकर, बहस व वाद-विवाद का आयोजन कर इस मकसद को पूरा किया गया।

(B) दूसरी पद्धति कानूनी हस्तक्षेप को जरूरी मानती थी जिसके प्रमुख प्रवक्ता थे - बंगाल में के. सी. सेन, महाराष्ट्र में रानाडे और आन्ध्रप्रदेश में विरेशलिंगम आदि शामिल थे। इनके अनुसार प्रथाओं सुधारों के लिए राज्य का सहयोग आवश्यक है। हालांकि इन लोगों का इस बात पर ध्यान नहीं गया कि सरकारी प्रयास संकीर्ण राजनीतिक एवं आर्थिक स्वार्थों से ऊपर नहीं उठ सकते थे और साथ ही ऐसे सुधारों को जनता की मान्यता भी मुश्किल से मिलती।

(C) डेरोजियो समूह के सदस्य जैसे दक्षिणारंजन मुखर्जी, रामगोपाल घोष और कृष्णमोहन ने परम्पराओं का बहिष्कार किया और समाज के मान्यताप्राप्त मानदंडों के खिलाफ विद्रोह किया। इन्होंने सामाजिक समस्याओं के प्रति समझौता न करने वाली क्रांतिकारी प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया। वे पश्चिम के नये विचारधारा से बहुत प्रभावित थे।

(D) चौथी प्रवृत्ति सामाजिक कार्यों द्वारा सुधार की थी। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, डी. के. कर्वे, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज की भूमिका को इस सन्दर्भ में समझा जा सकता है। इन सुधारकों ने बुद्धिजीवी प्रयासों की सीमा समझी। ईश्वरचन्द्र ने अपना जीवन विधवा विवाह कराने में बिता दिया लेकिन कुछेक विवाह ही करा पाये। इससे स्पष्ट है कि औपनिवेशिक भारत में सामाजिक सुधारों के प्रभाव की एक सीमा थी।

इन सामाजिक सुधारकों ने सुधार के लिए 'तर्कवाद' का सहारा लिया। अक्षय कुमार दत्त का दावा था कि प्राकृतिक और सामाजिक प्रवृत्ति को बुद्धि द्वारा समझा जा सकता है। विश्वास को विवेक द्वारा बदलने का प्रयास किया गया और सामाजिक-धार्मिक परम्परा को उनकी सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से आंका गया। इसी परिप्रेक्ष्य में ब्रह्म समाज ने वेदों की अमोघता को नकारा और सैय्यद अहमद ने साफ कहा कि धर्म ने यदि समाज की माँगों को पूरा नहीं किया तो प्रभावहीन हो जायेगा जैसा

Date:

कि इस्लाम के साथ भारत में हुआ है। राममोहनराय ने सुधारों के लिए धर्मग्रंथों का सहारा लिया भी तो अपनी बातों को प्रमाणित करने के लिए।

सुधारकों का ईश्वर की एकता में विश्वास था। राममोहनराय ने विभिन्न धर्मों को अखिल आस्तिकवाद का राष्ट्रीय अवतार माना। सैय्यद अहमद ने भी कहा कि सभी पैगम्बरों का एक ही संदेश था और हर देश और राष्ट्र के अलग-अलग पैगम्बर थे। केशवचन्द्र ने स्पष्ट कर दिया कि विश्व के सभी प्रस्थापित धर्म सत्य है।

महत्व : सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज को जनतांत्रिक बनाने, घृणित रिवाजों एवं अंधविश्वास को दूर करने ज्ञान के प्रसार और एक विवेकपूर्ण व आधुनिक दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिन्दू सुधार आंदोलनों ने बहुदेववाद, मूर्तिपूजा, शक्तिवाद और धार्मिक प्रधानों की तानाशाही की आलोचना की तो अलीगढ़ आंदोलन ने बहुविवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन कर मुस्लिम समाज में एक नया लोकाचार पैदा करने की कोशिश की। इसने कुरान की स्वतंत्र व्याख्या एवं पश्चिमी शिक्षा का समर्थन किया।

जातिप्रथा का विरोध महज नैतिक आधार पर नहीं हुआ वरन इसे समाज में फूट डालनेवाली प्रवृत्ति के रूप में समझा गया। स्त्रियों की दशा में सुधार की इच्छा का आधार केवल विशुद्ध मानवीय न होकर समाज में विकास लाने की खोज का ही एक रूप था। बुनियादी तौर पर सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रयास सामंती समाज के मूल्यों को बदलकर नवीन बुर्जुवा चरित्र के मूल्यों से समाज को परिचित कराना था।

—X—